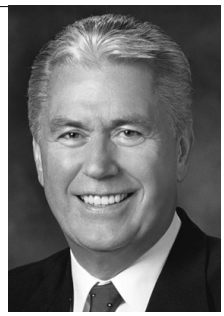

अध्यक्ष डीटर एफ. उकडोर्फ द्वारा
प्रथम अध्यक्षता में द्वितीय सलाहकार

वृक्ष लगाने का सर्वोत्तम समय

प्राचीन रोम में, योनस शुरूआत का ईश्वर था । इसका वर्णन अक्सर दो चेहरों से होता था—एक अतीत को देखता हुआ, दूसरा आगे भविष्य को देखता हुआ । कुछ भाषाओं में साल के शुरूआत के महिने का नाम जनवरी उसी के नाम पर रखा गया है, यह समय चिंतन करने के साथ साथ योजना बनाने का समय भी होता है ।

हजारों वर्ष के पश्चात, पूरे संसार की कई संस्कृतियों में नये वर्ष को संकल्प करने की परंपरा चली आ रही है । अवश्य ही, संकल्प करना सरल है—पर इनका पालन करना ं बिलकुल अलग बात है ।

एक व्यक्ति जिसने नये वर्ष के संकल्पों की एक लंबी सूची बनाई थी अपनी प्रगति से काफी खुश था । उसने स्वयं सोचा, ''अबतक, मैंने अपने भोजन पर नियंत्रण रखा है, मैंने गुस्सा नहीं किया, मैंने अपने बजट का ध्यान रखा, और मैंने एक बार भी पड़ोसी के कुत्ते के बारे में शिकायत नहीं की है । लेकिन आज 2 जनवरी है अभी अलार्म बंद हुआ है और यह बिस्तर से उठने का समय है । इसी प्रकार अपने मार्ग पर चलने के लिए किसी चमत्कार की जरूरत होगी ।''

फिर से शुरूआत करना

नई शुरूआत करने के लिए आश्चर्यजनकरूप से एक आशा होती है । मैं मानता हूं कभी न कभी हम सभी दुबारा से साफ सुथरी शुरुआत करना चाहते हैं ।

मैं साफ-सुथरी हार्ड ड्राईव के साथ एक नया कंपूटर पाना पसन्द करता हूं । क्योंकि कुछ समय तक यह बिलकुल ठीक से काम करता है । लेकिन जैसे जैसे दिन और हफ्ते गुजरते जाते हैं और इसमें अधिक सॉफ्टवेयर डाले जाते हैं (कुछ जानबूझकर, और कुछ इतना जानबूझकर नहीं), परिणामस्वरूप कंपूटर में अवरोध आने लगता है, और जो काम पहले जल्दी और निपुणता से हो जाते थे बहुत मंदगति से होता है । कभी-कभी यह बिलकुल भी काम नहीं करता । यहां तक कि इसे शुरू करना ही कठिन हो जाता है जब हार्ड ड्राइव कई प्रकार के इलैकट्रानिक अव्यवस्था और कचरे से भर जाता है । कभी ऐसा समय भी आता है जब कंपूटर को फिर से फॉरमेट करना और फिर से नई शुरूआत करना ही एकमात्र उपाय रह जाता है ।

इसी प्रकार जब मनुष्य भी भय, संदेह, और कष्टदायक अपराध बोध से अव्यवस्थित हो सकता है । जो गलतियां (जानबूझकर और अनजाने में) हमने की हैं इतनी भारी हो सकती हैं कि जो हम जानते हैं कि हमें करना चाहिए उसे करना कठिन लगने लगता है ।

पाप के मामले में, एक आश्चर्यजनक फिर से बदलाव की प्रक्रिया है जिसे पश्चाताप कहते हैं जिससे हम अपनी आंतरिक हार्ड ड्राइव की अव्यवस्था को ठीक कर सकते हैं जो हमारे हृदय पर बोझ डालते हैं । यीशु मसीह के चमत्कारी और करूणामय प्रायश्चित के द्वारा, सुसमाचार हमें अपनी आत्माओं को पाप के दाग से स्वच्छ करके फिर से एक नया, शुद्ध और एक निष्कपट बच्चे के समान बनने का मार्ग दिखाता है ।

लेकिन कभी हमें कुछ अन्य बातें मंद करती और पकड़े रहती हैं, जिससे बेकार के विचार और काम हमारे लिए शुरूआत करना कठिन बना देते हैं ।

अपने भीतर के सर्वोत्तम को बाहर लाना

लक्ष्य बनाना एक योग्य प्रयास है । हम जानते हैं कि हमारे स्वर्गीय पिता के पास लक्ष्य हैं क्योंकि उसने हमसे कहा था कि उसका कार्य और उसकी महिमा ''मनुष्य को अमरत्व और अनंत जीवन देना है'' (मूसा 1:39) ।

हमारे व्यक्तिगत लक्ष्य हमारी भीतर की सर्वोत्तमता को बाहर ला सकते हैं । फिर भी, एक चीज है जो संकल्प बनाने और पालन करने के हमारे प्रयासों में अवरोध डाल सकती है । हम कभी कभी शुरूआत करने में देर करते हैं, सही समय की प्रतिक्षा करते हैं—नये

साल का पहला दिन, गरमियों की शुरूआत, जब हम धर्माध्यक्ष या सहायता संस्था की अध्यक्षा की बुलाहट के लिए चुने जाएंगे, बच्चों के स्कूल जाने के बाद, हमारे रिटायर होने के बाद ।

अपने धार्मिक लक्ष्यों की दिशा पर चलना शुरू करने से पहले आपको निमंत्रण की जरूरत नहीं है । जो व्यक्ति आपको बनना चाहिए उसे बनने के लिए आपको किसी अनुमत्ति की प्रतिक्षा करने की जरूरत नहीं है । गिरजे में सेवा करने के लिए आपको निमंत्रण की प्रतिक्षा करने की आवश्यकता नहीं हैं ।

हम कभी कभी चुने जाने के लिए अपने जीवन के वर्ष व्यर्थ गवां देते हैं (देखें सिऔरअ 121:34–36) । लेकिन यह एक गलत धारणा है । आपको पहले से ही चुना हुआ है !

कभी कभी मैंने अपने जीवन में कामों, चिंताओं, या व्यक्तिगत दुखों के कारण कई रातें बिना सोए गुजारी हैं । लेकिन बेशक रात कितनी काली क्यों न हो, सुबह सूर्य ऊगेगा, इस विचार से मुझे हमेशा उत्साह मिलता है ।

हर नये दिन के साथ, नयी भोर होती है—न केवल पृथ्वी के लिए बल्कि हमारे लिए भी । और नये दिन के साथ नयी शुरूआत आती है—फिर से शुरूआत करने का मौका ।

लेकिन क्या होगा यदि मैं असफल होता हूं ?

कभी कभी हमारा भय हमें आगे नहीं बढ़ने देता है । हमें डर लगता है कि हम सफल नहीं होगें, कि हम सफल होंगे, कि हो सकता है हमें शर्मिंदा होना पड़े, कि सफलता हमें बदल देगी, या कि यह जिनसे हम प्यार करते हैं उन्हें बदल देगी ।

और इसलिए हम प्रतिक्षा करते हैं । या प्रयास करना छोड़ देते हैं ।

लक्ष्यों को बनाते समय हमें एक दूसरी बात को याद रखने की जरूरत है : हम लगभग निश्चितरूप से असफल होंगे—कम से कम थोड़े समय के लिए । लेकिन निराश होने के स्थान पर, हमें शक्ति मिल सकती है क्योंकि यह समझ अभी इस समय एकदम परिपूर्ण होने के दबाव को हटा देती है । यह शुरूआत में ही समझा देती है कि कभी न कभी, हम असफल हो सकते हैं । इसे पहले से जानने से असफलता से होने वाली घवराहट और निराशा दूर हो जाती है ।

जब हम अपने लक्ष्यों की ओर इस तरह बढ़ते हैं, असफलता हमें सीमित नहीं करती । याद रखें, बेशक हम अभी अपने निधार्रित लक्ष्य तक पहुंचने में असफल रहते हैं, लेकिन हम उस मार्ग में आगे बढ़ते रहते हैं जो उसकी ओर जाता है ।

और यह महत्वपूर्ण—इसका एक विशेष अर्थ है ।

बेशक हम अन्तिम रेखा तक नहीं पहुंच पाते हैं, लेकिन निंरतर यात्रा जारी रखने से हम उससे महान बन जाएंगे जो हम पहले थे ।

शुरूआत करने का सबसे अच्छा समय अभी है

एक पुरानी कहावत कहती है, ''वृक्ष लगाने का सर्वोत्तम समय 20 वर्ष पूर्व था । दूसरा सर्वोत्तम समय अभी है ।''

शब्द *अभी* के विषय में कुछ आश्चर्यजनक और आशाजनक है । इस सच्चाई में कुछ शक्ति है कि यदि हम अभी निश्चय करना चुनें तो, हम इसी क्षण से आगे बढ़ सकते हैं ।

जो व्यक्ति हमें होना चाहिए उसे होने की शुरूआत करने का सर्वोत्तम समय अभी है—अब न केवल 20 साल पहले लेकिन संपूर्ण अनंतकाल के लिए भी ।

इस संदेश से शिक्षा

अध्यक्ष उकडोर्फ ने समझाया था कि जब हम अपने लक्ष्यों तक पहुंचने में असफल होते हैं, ''हमें शक्ति मिल सकती है । ... बेशक हम समापन रेखा तक नहीं पहुंच पाते हैं, लेकिन निंरतर यात्रा जारी रखने से हम उससे महान बन जाएंगे जो हम पहले थे ।'' परिवार के सदस्यों से अनुभवों को बाटने के लिए कहें जिसमें उन्हें करने के बजाए उसके परिणाम से बहुत कुछ सीखा था, जैसे स्कूल से पास होते समय या पुरस्कार प्राप्त करते समय ।

युवा

अभी से—अपना सवोत्तम बनो

अध्यक्ष उकर्डोफ सीखाते हैं कि ''व्यक्तिगत लक्ष्य हमारी उत्तमता को प्रदर्शित कर सकता हैं ।'' अपने जीवन के क्षेत्र में दो या तीन लक्ष्य को निधार्रित करने पर विचार करें उदाहरण के लिए जैसे, शारीरिक स्वास्थ्य, आत्मिक स्वास्थ्य, और मित्रता । इन क्षेत्रों में इस वर्ष आप क्या सफलताओं को लाना चाहते हो ? जब आप प्रार्थनापूर्वक कुछ लक्ष्यों को सोचते हैं, सुनिश्चित करें कि ये प्राप्त किये जा सकते हैं लेकिन आपको विकास करने की जरूरत होगी । अपनी दैनिकी में अपने लक्ष्यों की विस्तार से व्याख्या करें ताकि वर्ष बीतने पर अपनी प्रगति को देख सकें ।

© 2014 Intellectual Reserve, Inc. द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित । भारत में छपी । अंग्रेजी अनुमतिः 6/13 । अनुवाद अनुमतिः 6/13 । *First Presidency Message, January 2014* का अनुवाद । Hindi । 10861 294

यीशु समीह दिव्य मिशनः आदर्श

इस सामाग्री को पढ़ें, और जैसा उचित हो, बहनें जिन से आप भेंट करती हैं के साथ इस पर चर्चा करें । अपनी बहनों को मजबूत और सहायता संस्था को अपने जीवन का सक्रिय हिस्सा बनाने में मदद के लिए प्रश्नों का प्रयोग करें । अधिक जानकारी के लिए, ***reliefsociety.lds.org*** *को देखें ।*

विश्वास, परिवार, सहायता

यह उद्धारकर्ता के मिशन के पहलुओं का वर्णन करने वाली श्रृंखला का भेंट करने वाला शिक्षा संदेश एक भाग है ।

जैसा हम समझते हैं कि यीशु मसीह सब बातों में हमारा आदर्श है, हम उसका अनुसरण करने की अपनी इच्छा का विकास कर सकते हैं । मसीह के पद-चिन्हों पर चलने के लिए हमें उत्साहित करने को धर्मशास्त्र भरे पड़े हैं । नफाइयों से मसीह ने कहा था, ''क्योंकि जिस कार्य को तुमने मुझे करते हुए देखा है उसे तुम्हें भी वैसा ही करना होगा'' (3 नफी 27:21) । थोमा से यीशु ने कहा था, ''मैं ही मार्ग, सच्चाई, और जीवन हूं: कोई भी मनुष्य पिता के पास मेरे सिवाय नहीं पहुंच सकता'' (यूहन्ना 14:6) ।

आज हमारे मार्गदर्शक हमें उद्धारकर्ता को हमारा आदर्श बनाने का स्मरण कराते हैं । लिंडा के. बर्टन, सहायता संस्था की महा अध्यक्षा ने कहा था, ''जब हमें से प्रत्येक के हृदयों में गहराई से प्रायश्चित का सिद्धांत लिखा होगा, तब हम उस प्रकार के लोग बनना आंरभ हो जाएंगे जैसा प्रभु हमें बनाना चाहता है ।''[1]

अध्यक्ष थॉमस एस. मॉनसन ने कहा था, ''हमारा प्रभु और हमारा उद्धारकर्ता, यीशु मसीह, हमारा आदर्श और हमारी शक्ति है ।''[2]

आओ हम यीशु मसीह के निकट आने, उसकी आज्ञाओं का पालन करने, और हमारे स्वर्गीय पिता के पास वापस जाने का संकल्प करें ।

धर्मशास्त्रों से

2 नफी 31:16; अलमा 17:11; 3 नफी 27:27; मोरनी 7:48

हमारे इतिहास से

''उसने मार्ग चिन्हित किया और मार्गदर्शन किया था,'' एलिजा आर. स्नो, सहायता संस्था की द्वितीय महा अध्यक्षा ने यीशु मसीह की नश्वर सेवकाई के विषय में लिखा था ।[3] उसने लोगों की सेवा की थी—एक के द्वारा एक। उसने सीखाया था कि हमें निन्यानवें को छोड़कर एक भटके हुए को बचाना है (देखें लूका 15:3–7) । उसने लोगों को चंगा किया और सीखाया, यहां तक कि 2,500 लोगों की भीड़ में उसने प्रत्येक के लिए समय निकाला था (देखें 3 नफी 11:13–15; 17:25) ।

अंतिम-दिनों की संत स्त्रियों के विषय में, अध्यक्ष डीटर एफ. उकडोर्फ, प्रथम अध्यक्षा में द्वितीय सलाहकार ने कहा था : ''आप शानदार बहनें दूसरों के लिए करूणामय सेवा करती हैं क्योंकि यह व्यक्तिगत लाभ पाने की इच्छाओं का स्थान ले लेती है । इस से आप उद्धारकर्ता का अनुसरण करते हो । ... उसके विचार हमारे दूसरों की मदद की समानता में थे ।''[4]

विवरण

1. Linda K. Burton, "Is Faith in the Atonement of Jesus Christ Written in Our Hearts?" *Ensign* or *Liahona,* नव. 2012, 114 ।
2. Thomas S. Monson, "Meeting Life's Challenges," *Ensign,* नव. 1993, 71 ।
3. "How Great the Wisdom and the Love," *Hymns,* no. 195 ।
4. Dieter F. Uchtdorf, "Happiness, Your Heritage," *Ensign* or *Liahona,* नव. 2008, 120 ।

मैं क्या कर सकती हूं ?

1. क्यों और कैसे यीशु मसीह मेरा आदर्श है ?

2. कैसे जिन बहनों से भेंट करती हूं उनकी सेवा करके मुझे उद्धारकर्ता का अनुसरण करने में मदद मिलती है ?

© 2014 Intellectual Reserve, Inc. द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित । भारत में छपी । अंग्रेजी अनुमतिः 6/13 । अनुवाद अनुमतिः 6/13 । *Visiting Teaching Message, January 2014* का अनुवाद । Hindi । 10861 294